

# डॉ. अयो अदेवुया , 2 कुरिन्थियों, सत्र 12, 2 कुरिन्थियों 11 , पॉल की मूर्खतापूर्ण शेखी बघारना

© 2024 आयो एडेवुया और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 12, 2 कुरिन्थियों 11, पॉल की मूर्खतापूर्ण शेखी बघारना है।

अब हम 2 कुरिन्थियों अध्याय 11 पर आते हैं जहाँ पॉल अपनी मूर्खतापूर्ण शेखी बघारना शुरू करता है।

याद दिलाने के लिए, जैसा कि हमने देखा है, कुरिन्थ में पॉल के विरोधी घमंडी और दिखावटी थे। उन्होंने पॉल से श्रेष्ठ होने का दावा किया और समुदाय में घुसकर कुछ झूठी शिक्षाओं का प्रचार किया। परिणामस्वरूप, उन्होंने पॉल के अधिकार को कमजोर कर दिया, जो कुरिन्थियन चर्च के संस्थापक थे। अब, उन्होंने न केवल घमंड किया बल्कि कुरिन्थ के कुछ विश्वासियों से भीख भी माँगी।

कुछ लोगों ने इन झूठे दावों को सुन लिया था और ऐसा करके वे अपनी आध्यात्मिक भलाई को खतरे में डाल रहे थे। इस समय चर्च की आध्यात्मिक भलाई दांव पर लगी हुई थी, और पॉल को इन कुरिन्थियन मसीहियों को झूठे शिक्षकों के प्रतिकूल प्रभाव से बचाने के लिए जो भी कार्रवाई या कदम उठाने की ज़रूरत थी, वह करना था। इसलिए, पॉल को उपलब्धि पर गर्व के कारण नहीं बल्कि चर्च के प्रति अपने ईर्ष्यालु स्नेह के कारण घमंड करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

वह उनसे प्यार करता था, और बदले में वह उनका प्यार चाहता था। इसलिए, हम वास्तव में इस मूर्खतापूर्ण घमंड को पूरे अध्याय 12, श्लोक 13 तक देखते हैं। इसलिए, 11:1 से 12:13 तक, हम इन्हें अध्याय दर अध्याय लेंगे।

तो, हम यहाँ अध्याय 11 को देखेंगे। यहाँ, पॉल ने अपने किसी भी लेखन में पाए जाने वाले सबसे तीखे विवाद की शुरुआत की है। वह जो करता है वह यह है कि वह सुसमाचार की सच्चाई से प्रभावित व्यंग्य के हथियार का कुशलतापूर्वक उपयोग करता है।

उन्होंने कहा कि 10, 12 और 18 में पाया जाने वाला शब्द 'घमंड' यहाँ भी जारी है। इसलिए पौलुस का घमंड और भी अधिक विशिष्ट हो जाता है और इस प्रकार जो कुछ अभी लिखा गया है उसके प्रकाश में और भी अधिक खतरनाक हो जाता है क्योंकि उसने अध्याय 10, पद 17 में कहा है कि जो प्रभु में घमंड करना चाहता है। लेकिन शुरुआत में, वह उनसे कहता है कि वे उसकी मूर्खतापूर्ण घमंड को सहन करें।

उसने कहा कि वह चाहता था कि वे उसकी मूर्खता को सहन करें। वह थोड़ा घमंड करने वाला था, और उसने फिर से पद 16 से 21 में यही कहा। अनिच्छा से, उसने घमंड किया और कहा कि

मैं ऐसा नहीं करना चाहता, लेकिन मैं ऐसा करने जा रहा हूँ क्योंकि तुम ही हो जो जानना चाहते थे, और मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ, लेकिन तुम देखो जब मैं ऐसा करता हूँ, तो मैं मूर्ख बन जाता हूँ।

हालाँकि, पौलुस का घमंड खोखला नहीं है क्योंकि वह किसी भी तरह से उनसे कमतर नहीं था। इसलिए, वह उन्हें पद 1 से 4 में अपने घमंड को सहने के लिए कहता है, और पद 5 से 15 में वह उनसे कहता है कि वह उनसे कमतर नहीं है। फिर, 16 से 21 में, उसने फिर से धीरज रखने के लिए कहा, और इस विस्तृत परिचय के बाद, पौलुस अब अध्याय 11 में, पद 21 के अंतिम भाग से अध्याय 12, पद 10 में उचित घमंड करना शुरू करता है।

वह अपने वंश, अपने कष्टों और व्यक्तिगत रहस्योद्घाटन में घमंड करने लगा, और इन सभी को उसने अपने क्रूस पर चढ़े और जी उठे प्रभु के प्रति अपनी समानता की घोषणा में यह कहते हुए सारांशित किया कि जब मैं कमजोर होता हूँ, तब मैं मजबूत होता हूँ। फिर, एक समापन उपसंहार में, हालाँकि अपने घमंड की मूर्खता को स्वीकार करते हुए, वह अध्याय 12, श्लोक 11 से 13 में अपने वास्तविक आचरण को आधार के रूप में प्रस्तुत करता है, जिस पर उसने अपने प्रेरित होने की प्रामाणिकता को प्रदर्शित किया है। इसलिए अध्याय 11 को देखते हुए हम अध्याय 11 को देखना चाहते हैं।

मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी थोड़ी सी मूर्खता को सहन करो, परन्तु तुम वास्तव में मेरे साथ सहन कर रहे हो, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए ईश्वरीय ईर्ष्या से जलता हूँ। क्योंकि मैंने तुम्हारी सगाई एक ही पति से कर दी है, ताकि मैं तुम्हें मसीह के सामने एक पवित्र या शुद्ध कुंवारी के रूप में प्रस्तुत कर सकूँ। परन्तु मुझे डर है कि जैसे साँप ने अपनी धूर्तता से हवा को बहकाया था, वैसे ही तुम्हारे मन भी मसीह के प्रति भक्ति की सरलता और पवित्रता से भटक न जाएँ।

क्योंकि यदि कोई आकर किसी दूसरे यीशु का प्रचार करे, जिसका प्रचार हम ने नहीं किया, या कोई और आत्मा पाए, जो तुम ने नहीं पाया, या कोई और सुसमाचार पाए, जो तुम ने ग्रहण नहीं किया, तो इसे तुम अच्छी तरह सह लेते हो, क्योंकि मैं अपने आप को किसी भी रीति से बड़े प्रेरितों से कम नहीं समझता। परन्तु यदि मैं बोलने में अनाड़ी हूँ, तौभी ज्ञान में अनाड़ी नहीं हूँ।

हमने हर बात में तुम्हें यह बात बता दी है। या मैंने कोई पाप किया कि मैं ने अपने आप को दीन किया, कि तुम महान हो जाओ, क्योंकि मैंने तुम्हें परमेश्वर का सुसमाचार मुफ्त में सुनाया? मैंने दूसरी कलीसियाओं से पैसे लेकर उन्हें लूटा, और जब मैं तुम्हारे बीच था, तो मुझे दरिद्रता का सामना करना पड़ा।

मैं किसी पर बोझ नहीं बना। क्योंकि जब भाई मकिदुनिया आए, तो उन्होंने मेरी हर ज़रूरत पूरी की और हर बात में मैंने अपने आप को तुम पर बोझ बनने से रोका। आगे भी ऐसा ही करता रहूँगा।

चूँकि मसीह की सच्चाई मुझमें है, इसलिए मेरा यह घमंड अखाया के इलाकों में नहीं रुकेगा। क्यों? क्योंकि मैं तुमसे प्यार नहीं करता। परमेश्वर जानता है कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ।

लेकिन मैं जो कर रहा हूँ, वह करता रहूँगा, ताकि मैं उन लोगों को अवसर न दूँ जो हमारे जैसे ही माने जाने का अवसर चाहते हैं, जिस बात पर वे गर्व कर रहे हैं, क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित हैं, धोखेबाज़ चलनेवाले हैं, जो मसीह के प्रेरितों का भेष धारण करते हैं। कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि शैतान भी खुद को ज्योतिर्मय स्वर्गदूत के रूप में प्रच्छन्न करता है।

इसलिए यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का वेश धारण करते हैं, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि उनका अन्त उनके कामों के अनुसार होगा। मैं फिर कहता हूँ, कोई मुझे मूर्ख न समझे। परन्तु यदि ऐसा समझे, तो मुझे मूर्ख ही समझो, ताकि मैं भी थोड़ा घमण्ड कर सकूँ।

मैं जो कहता हूँ, वह प्रभु की तरह नहीं कहता, बल्कि मूर्खता की तरह कहता हूँ, इस गर्व के भरोसे पर। जब बहुत से लोग शरीर के अनुसार घमण्ड करते हैं, तो मैं भी घमण्ड करूँगा। क्योंकि तुम बुद्धिमान होकर मूर्खों को प्रसन्नता से सह लेते हो।

क्योंकि तुम सहन करते हो, अगर कोई तुम्हें गुलाम बनाता है, कोई तुम्हें खा जाता है, कोई तुम्हारा फायदा उठाता है, कोई खुद को बड़ा दिखाता है, कोई तुम्हारे चेहरे पर तमाचा मारता है। मुझे शर्म आती है कि मैं कहता हूँ कि हम तुलनात्मक रूप से कमज़ोर रहे हैं। लेकिन जिस मामले में कोई और साहसी है, मैं मूर्खता से बोलता हूँ।

मैं भी उतना ही साहसी हूँ। क्या वे इब्रानी हैं? मैं भी हूँ। क्या वे इस्राएली हैं? मैं भी हूँ। क्या वे अब्राहम के वंशज हैं? मैं भी हूँ। क्या वे मसीह के सेवक हैं? मैं पागलों की तरह बोलता हूँ। मैं भी बहुत ज़्यादा मज़दूरी करता हूँ, बहुत ज़्यादा कैद में रहता हूँ, अनगिनत बार पीटा जाता हूँ, अक्सर मौत के खतरे में रहता हूँ।

पाँच बार यहूदियों ने मुझे उनतीस कोड़े मारे। तीन बार मुझे बेंतों से मारा गया। एक बार मुझे पत्थरवाह किया गया।

तीन बार मेरा जहाज़ डूब गया। एक रात और एक दिन गहरे समुद्र में बिताया। मैं नदियों के खतरों, लुटेरों के खतरों, अपने देशवासियों के खतरों, अन्यजातियों के खतरों, शहर के खतरों, जंगल के खतरों, समुद्र पर खतरों, झूठे भाइयों के बीच खतरों में लगातार यात्रा करता रहा हूँ।

मैं कई रातों तक बिना सोये, भूख और प्यास में, अक्सर बिना भोजन के, ठंड और खुले में श्रम और कठिनाई में रहा हूँ। ऐसी बाहरी चीजों के अलावा, सभी कलीसियाओं के लिए चिंता का दैनिक दबाव मुझ पर है। मेरे कमजोर होने के बिना कौन कमजोर है? मेरी गहन चिंता के बिना कौन पाप में चला जाता है? अगर मुझे घमंड करना है, तो मैं अपनी कमजोरी से संबंधित चीजों पर घमंड करूँगा।

प्रभु यीशु का परमेश्वर और पिता, जो सदा धन्य है, जानता है कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। दमिश्क में, राजा अरेटस के अधीन जातीय लोग मुझे पकड़ने के लिए दमिश्क के शहर की रखवाली कर रहे थे, और मुझे दीवार में एक खिड़की के माध्यम से एक टोकरी में नीचे उतारा गया, और इस

तरह उनके हाथों से बच निकला। हम अध्याय 12 में श्लोक 10 तक पढ़ेंगे क्योंकि यह एक साथ चलता है।

घमंड करना जरूरी है, हालाँकि यह लाभदायक नहीं है, लेकिन मैं प्रभु के दर्शन और रहस्योद्घाटन के बारे में बताता रहूँगा। मैं मसीह में एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ, जो 14 साल पहले, चाहे शरीर में हो या शरीर से बाहर, मैं नहीं जानता कि परमेश्वर जानता है। ऐसा व्यक्ति तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया था, और मैं जानता हूँ कि ऐसा व्यक्ति, चाहे शरीर में हो या शरीर से अलग, मैं नहीं जानता, परमेश्वर जानता है, स्वर्ग में उठा लिया गया था और उसके पास अकथनीय शब्द थे, जिन्हें एक आदमी को बोलने की अनुमति नहीं है।

ऐसे व्यक्ति के विषय में तो मैं घमण्ड करूँगा, परन्तु अपने विषय में मैं अपनी निर्बलताओं को छोड़ कर किसी बात पर घमण्ड नहीं करूँगा। क्योंकि यदि मैं घमण्ड करना चाहूँ, तो मूर्ख नहीं बनूँगा, क्योंकि मैं सच बोलूँगा, परन्तु मैं ऐसा नहीं करूँगा, ऐसा न हो कि कोई मुझ में जो देखता है या सुनता है, उससे अधिक मुझे महत्व न दे। प्रकाशनों की महानता के कारण, इस कारण से कि मैं अपने आप को बड़ा न समझूँ, मेरे शरीर में एक कांटा चुभाया गया, अर्थात् शैतान का एक दूत जो मुझे पीड़ा पहुंचाए, कि मैं अपने आप को बड़ा न समझूँ।

इस विषय में मैंने प्रभु से तीन बार प्रार्थना की कि वह मुझे छोड़ दे, और उसने मुझसे कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है, क्योंकि सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है। इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूँगा, कि मसीह की सामर्थ्य मुझ में वास करे। इसलिये मैं मसीह के कारण निर्बलताओं, अपमानों, क्लेशों, सतावों, कठिनाइयों में संतुष्ट हूँ, क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी बलवन्त होता हूँ।

तो, आप पॉल के घमंड के लिए समर्पित एक लंबा खंड देखते हैं। तो, अपने विस्तृत परिचय के बाद, पॉल 1121बी से 1210 तक घमंड करता है। वह लगभग हर चीज़ में घमंड करता है।

आप देखिए, विडंबना यह है कि पौलुस अपने विरोधियों की नकल करके खुद की प्रशंसा करता है। यही विडंबना है। पौलुस वास्तव में अपने प्रभु मसीह पर गर्व करता है।

मूर्ख के मुखौटे में उसकी शेखी बघारने और उसकी सेवकाई में उसकी वास्तविक शेखी बघारने के बीच का विरोधाभास पूरे अंश को एक बहुत ही अनोखा साहित्यिक आकर्षण और मनमोहक शक्ति देता है। इसीलिए हम इसे पूरा पढ़ते हैं, भले ही हम इसे अध्याय दर अध्याय पढ़ रहे हों। लेकिन आपको पौलुस की शेखी बघारने की भावना समझ में आती है।

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जैसा कि हमने पढ़ा, आपने शायद गौर किया होगा कि यह पौलुस की पीड़ाओं में उसकी कमज़ोरी और प्रभु से मिले उसके दर्शनों और रहस्योद्घाटनों की प्रकृति को प्रकट करता है। ये स्वीकारोक्ति कुरिन्थ में विरोध के साथ संघर्ष के परिणामस्वरूप आई। आप देखिए, हमने जो अभी पढ़ा है उसके बिना, हम पौलुस की कमज़ोरी में शक्ति की गवाही को नहीं समझ पाते।

लेकिन क्योंकि उन्होंने उसे मजबूर किया और उन्होंने उसे उससे छीन लिया, इसलिए हम समझते हैं कि कमज़ोरी में शक्ति कैसे होनी चाहिए। वह सभी कष्टों से गुज़रा, और फिर भी उसके ज़रिए परमेश्वर की शक्ति प्रकट हुई। आप देखिए, अध्याय 10 से 13 तक, जिस बयानबाज़ी के बारे में हमने पहले कहा था, वह फ़ोरेंसिक या न्यायिक बयानबाज़ी के रूप में बनी हुई है।

और आप पूरा भाषण देख रहे हैं। फ़ोरेंसिक बयानबाज़ी, जो कानून की अदालत की तरह है, हावी हो जाती है क्योंकि पॉल फिर से अपने प्रेरितिक अधिकार का बचाव करता है और इस तरह, एक मजबूत भावनात्मक अपील के साथ अपने सुसमाचार का बचाव करता है। पॉल यहीं पर ऐसा कर रहा है क्योंकि वह शेखी बघारना शुरू कर देता है।

यहाँ, पौलुस इस भावना के होने के कारण बताता है और कुरिन्थ में समस्या से निपटने के लिए अपनाई गई रणनीति का वर्णन करता है। अपने शत्रुओं की चालों से मजबूर होकर, पौलुस थोड़ी मूर्खता करके दिखाता है कि उनके आरोप झूठे हैं। यही वह है जिसे वह 11:1 में कहता है। वह कुरिन्थियों को अपनी मूर्खता में उसका साथ देने के लिए कहता है और उसे पूरा भरोसा है कि वे ऐसा करेंगे।

पौलुस अपने प्रेरितत्व के बचाव को मूर्खता कहता है क्योंकि वह जानता है कि प्रेरितत्व के बारे में जो बातें वह सम्माननीय मानता था, उन्हें कुरिन्थ के कुछ आलोचकों द्वारा मूर्खतापूर्ण माना जाएगा। आइए इस भाग को देखें। नंबर एक, हम आयत 11 से 6 से शुरू करते हैं, जो कुरिन्थियों से पौलुस की मूर्खता को सहन करने की अपील है।

यहाँ, शुरुआत में, पॉल ने एक अजीब तरह का आत्मरक्षा का परिचय दिया। उसने शुरू किया, उसने कहा कि मुझे उम्मीद है, मेरी इच्छा है, तुम मेरी मूर्खता को थोड़ा सहन करोगे। आप देखिए, इसे कुछ लोगों ने पॉल द्वारा कही जाने वाली बात के लिए एक पूर्वानुमानित माफ़ी कहा है।

वह माफ़ी मांगने वाला था। ठीक है, कृपया मेरा साथ दें। यही मैं कहना चाहता हूँ।

इसलिए, पौलुस ने कुरिन्थियों से अनुरोध किया कि वे उसकी थोड़ी-सी मूर्खता को सहन करें। मेरी मूर्खता को थोड़ा सहन करें। आप देखिए, मूर्खता शब्द पुराने नियम की ज्ञान परंपरा में निहित है।

आप इसे अय्यूब अध्याय 1 पद 22, नीतिवचन अध्याय 9, या यशायाह अध्याय 35 में देख सकते हैं। पौलुस अब इसका उपयोग अपने श्रोताओं को यह बताने के लिए करता है कि वह मूर्खता कर रहा है। ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि वह मूर्ख है।

आपको दोनों को अलग करने में सक्षम होना चाहिए। वह मूर्ख नहीं है, लेकिन वह मूर्खता का नाटक कर रहा है। वह आ रहा है; वह अपने विरोधियों का मज़ाक उड़ा रहा है, नकल करके, जिसे आप पैरोडी कहते हैं, आत्म-प्रशंसा में उनकी लिप्तता।

तो, पॉल शेखी बघार रहा है। पॉल की शेखी बघारना थोड़ी मूर्खता है। उसे उम्मीद है कि वे समझ जाएँगे और अपने लाभ के लिए इसे सहन करना जारी रखेंगे।

उसने कहा, मेरी सहनशीलता रखो। मेरी सहनशीलता रखो। फिर, आयत 2 से 4 में, पौलुस तीन कारण बताता है, जो उसके अनुरोध को प्रेरित करते हैं कि वे उसकी सहनशीलता रखें।

और प्रत्येक कारण को कण gar से पेश किया जाता है, जिसका अर्थ है के लिए। प्रत्येक कारण को पेश किया जाता है, जो अनुवाद में हमेशा स्पष्ट रूप से स्पष्ट नहीं होता है। मेरा मतलब है, लेकिन ग्रीक में, इसका अनुवाद gar से किया जाता है, इस कारण से।

इस कारण, पद 2 और 3 में, पद 2 और 3 में घमण्ड से शुरू करते हुए, पहला कारण क्या है? यहाँ लिखा है, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए ईश्वरीय ईर्ष्या से ईर्ष्या करता हूँ। क्योंकि मैंने तुम्हें एक पति से मसीह के लिए ब्याह दिया है ताकि मैं तुम्हें मसीह के लिए एक पवित्र कुंवारी के रूप में प्रस्तुत कर सकूँ। लेकिन मुझे डर है कि जैसे साँप ने अपनी धूर्तता से हवा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन मसीह के प्रति भक्ति की सरलता और पवित्रता से भटक न जाएँ।

इसलिए, उसने उन्हें यह बताकर शुरू किया कि उसने उन्हें मसीह के सामने पेश किया है। यह इस तरह से शुरू हुआ, मैं ईश्वरीय ईर्ष्या से प्रेरित हूँ। वह जिस कारण से घमंड करना चाहता था, वह ईश्वरीय ईर्ष्या थी क्योंकि, इसे इस तरह से कहें, तो कुरिन्थियों को हम इस समय एक तरह की लुप्तप्राय प्रजाति कह सकते हैं।

वे खतरे में थे। उनका विश्वास नष्ट होने का खतरा था। इसलिए, पौलुस कहता है, मैं तुम्हारे लिए ईश्वरीय ईर्ष्या से ईर्ष्या करता हूँ, जो बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है।

और फिर यह श्लोक 4 में है। चर्च उन लोगों को स्वीकार करने के लिए तैयार था जो उनके पास एक संदेश लेकर आए थे जो पौलुस द्वारा लाए गए संदेश के विपरीत था। और इसलिए, पौलुस कहता है, यही कारण है कि मैं घमंड करना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे और उनके बीच अंतर करने में सक्षम हों।

ये लोग मेरे द्वारा आपको दिए गए उपदेश से बिल्कुल अलग संदेश लेकर आए हैं। और मैं चाहता हूँ कि आप यह समझ सकें कि वे एक ही चीज़ नहीं हैं। यह एक अलग सुसमाचार है जो वे आपके पास ला रहे हैं।

फिर, नंबर तीन, वह पद 5 में ऐसा करना चाहता था क्योंकि उसने कहा, मैं प्रतिष्ठित प्रेरितों से भी कमतर नहीं हूँ। मैं आसन्न नहीं हूँ। मेरा मतलब है, प्रतिष्ठित प्रेरितों से, पद 5 में इसे देखें, क्योंकि मैं खुद को सबसे प्रतिष्ठित प्रेरितों से कमतर नहीं मानता।

तो, इसके तीन महत्वपूर्ण कारण हैं। पहला, ईश्वरीय ईर्ष्या। दूसरा, एक और सुसमाचार।

अगर आपको गलातियों के पहले अध्याय में यही वाक्य याद है, तो इसमें कहा गया है, अगर कुछ लोग तुम्हारे पास आकर दूसरा सुसमाचार प्रचार करते हैं, जो दूसरा नहीं है, दूसरा सुसमाचार, दूसरा सुसमाचार, जो उस अर्थ में दूसरा है, दूसरा, जो अलग है, जो उसी तरह का दूसरा नहीं है, जो हम तुम्हें प्रचार करते हैं। तो, यह पूरी तरह से एक अलग तरह का सुसमाचार है। आप इसे बहुत स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

यदि कोई तुम्हारे पास आकर किसी और यीशु का प्रचार करे, जिसका हमने प्रचार नहीं किया। तो, कुरिन्थियों से उसकी मूर्खता को सहन करने की पौलुस की विनती की पहली प्रेरणा उसकी ईश्वरीय ईर्ष्या से निकलती है। वह उनके लिए वही गहरी चिंता साझा करता है जो परमेश्वर उनके लिए रखता है।

यह ऐसा है जैसे, देखो, भगवान तुम्हारे बारे में चिंतित है। और मैं भी तुम्हारे बारे में चिंतित हूँ। इसलिए, मैं घमंड कर रहा हूँ क्योंकि मैं तुम्हारे बारे में उसी तरह चिंतित हूँ जिस तरह भगवान चिंतित है।

आप देखिए, उत्पत्ति का विचार मेरे कहने से बहुत दूर नहीं है; जब आप यहाँ व्याकरण को देखते हैं, तो ईश्वर का विचार बिल्कुल भी दूर नहीं है। ईश्वर में खुद ईर्ष्या है। आप देखिए, कुछ लोगों को इससे समस्या है।

जब आप सुनते हैं कि ईश्वर ईर्ष्यालु है, तो आपकी अपनी ईर्ष्या, मानवीय ईर्ष्या, लोगों की ईर्ष्या जैसी नहीं होती। लोग एक दूसरे से ईर्ष्या करते हैं क्योंकि उनके पास क्या है। ईर्ष्या और जलन: जिस ईर्ष्या की हम बात कर रहे हैं वह ईर्ष्या नहीं है जो चाहती है कि आपके पास वह न हो जो आपके पास है या ईर्ष्या।

मैं चाहता हूँ कि तुम पाओ, यह सिर्फ इतना ही नहीं है कि मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे पास वो हो जो तुम्हारे पास है। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे पास वो हो जो तुम्हारे पास है। यह मानवीय ईर्ष्या और जलन है।

यह वह ईर्ष्या नहीं है जिसके बारे में परमेश्वर बात कर रहा है। परमेश्वर हमसे बहुत प्यार करता है, और वह चाहता है कि हम उसकी एकमात्र संपत्ति बनें। वह हमसे प्यार करता है।

मेरा मतलब है, आपने इसे निर्गमन अध्याय 20, श्लोक पांच में शास्त्रों के कई अंशों में पढ़ा है, इसमें कहा गया है, तू उनके सामने झुकना नहीं, न ही उनकी सेवा करना। क्योंकि मैं, तेरा परमेश्वर यहोवा, ईर्ष्यालु परमेश्वर हूँ, जो मुझसे घृणा करने वालों के बच्चों और तीसरी और चौथी पीढ़ी पर उनके पिताओं के अधर्म का दण्ड देता हूँ। और बेशक, अध्याय 34, श्लोक 14 में, उसने कहा, क्योंकि तू प्रभु परमेश्वर के लिए किसी अन्य परमेश्वर की आराधना नहीं करेगा, क्योंकि प्रभु का नाम ईर्ष्यालु परमेश्वर है।

और हां, यह जकेल अध्याय 23, श्लोक 35, श्लोक 25 में, और मैं तुम्हारे विरुद्ध अपनी जलन रखूंगा, और वे तुम्हारे साथ उग्रता से पेश आएंगे। वे तुम्हारी नाक और कान काट लेंगे, और

तुम्हारे बचे हुए लोग तलवार से मारे जाएंगे। वे तुम्हारे बेटे और बेटियों को ले जाएंगे, और बचे हुए लोग आग से भस्म हो जाएंगे।

हमने उन सभी अंशों को पढ़ा है ताकि आप देख सकें कि पौलुस के मन में जिस तरह की ईर्ष्या है, वह उसी तरह की ईर्ष्या है जो परमेश्वर अपने लोगों के लिए रखता है। आप देखिए, चाहे जो भी सटीक बारीकियाँ हों, पौलुस का मुद्दा बहुत स्पष्ट है: किसी मजबूत, केवल मानवीय अर्थ से अधिक, परमेश्वर अंततः कुरिन्थ में कलीसिया के लिए अपनी भावना की गहराई में शामिल है। जैसा कि प्रेमी अपनी बुद्धि से बाहर दिखते हैं, पौलुस यहाँ मूर्खता करता है।

और यहाँ वह कहता है, मैंने तुम्हें एक पति के लिए वचनबद्ध किया है। मैं तुम्हारे लिए ईश्वरीय ईर्ष्या के साथ ईर्ष्या करता हूँ क्योंकि मैंने तुम्हें एक पति, मसीह के लिए वचनबद्ध किया है, ताकि मैं तुम्हें उसके लिए एक शुद्ध कुंवारी के रूप में प्रस्तुत कर सकूँ। अब, आइए फिर से इस पर वापस आते हैं।

यह इस अंश में पवित्रता की भाषा है। मैंने आपसे वादा किया है कि इस शब्द का प्रयोग नए नियम में केवल एक बार और केवल यहाँ किया गया है। और इसका अर्थ है निकट संगति में लाना, जुड़ना।

यहाँ इसका प्रयोग पारंपरिक यहूदी विवाह रीति-रिवाजों के संदर्भ में सगाई के लिए किया गया है। आप देखिए, पौलुस की कल्पना की पृष्ठभूमि पुराना नियम है। इस्राएल के भविष्यवक्ताओं ने अक्सर परमेश्वर को अपने लोगों के दुल्हे के रूप में चित्रित किया है।

आप इसे यशायाह अध्याय 50, पद 1 से 2 में देखते हैं। प्रभु ने इस प्रकार कहा, तेरी माता का त्यागपत्र कहां है, जिसे मैंने त्याग दिया? या मेरे कौन से लेनदार हैं, जिनके हाथ मैंने तुझे बेच दिया है? देख, अपने अधर्म के कारण तू ने अपने आप को बेच दिया है, और अपने अपराधों के कारण तेरी माता को त्याग दिया गया है। पद 2, जब मैं आया, तो कोई पुरुष क्यों नहीं था? जब मैंने पुकारा, तो क्या कोई उत्तर देनेवाला नहीं था? क्या मेरा हाथ इतना छोटा हो गया है कि उसे छुड़ाया न जा सके? या मुझमें छुड़ाने की शक्ति नहीं है? देख, मेरी डांट से मैं समुद्र को सुखा देता हूँ। मैं नदियों को जंगल बना देता हूँ।

उनकी मछलियाँ पानी न होने के कारण बदबू मारती हैं और प्यास से मर जाती हैं। तो यही पृष्ठभूमि है। इस्राएल परमेश्वर की दुल्हन है, और यह आकृति परमेश्वर और इस्राएल के बीच वाचा की प्रकृति को दर्शाती है, और यीशु ने स्वयं विवाह भोज के संदर्भ में मसीहाई समापन के बारे में अक्सर बात की।

हम सभी संदर्भों में नहीं जा सकते, लेकिन आप मैथ्यू अध्याय 22 में कहानी को अच्छी तरह से जानते हैं, और निश्चित रूप से मैथ्यू अध्याय 25 में दस कुंवारियों की कहानी, और आपको वह अच्छी तरह से याद है, जहां पांच बुद्धिमान थीं और पांच अन्यथा थीं। मैं उन्हें पाँच बुद्धिमान, पाँच अन्यथा कहता हूँ। वे अन्यथा थे, वे मूर्ख थे।

हम उन्हें मूर्ख कहते हैं। तो, आपको विवाह की वह भाषा याद है। फिर इफिसियों अध्याय 5 में, एक व्यक्ति जो बहुत अच्छी तरह से जाना जाता है।

इसलिए, पॉल ने पूरे कोरिंथियन चर्च के लिए विवाह के सादृश्य का उपयोग किया है, क्योंकि मसीह की दुल्हन को सामूहिक रूप से और सभी विश्वासियों के प्रतिनिधि के रूप में माना जाता है। पॉल कहते हैं, मैंने तुमसे सगाई कर ली है, जिसका अर्थ है एक अनन्य संबंध जो किसी अन्य बाहरी रिश्ते को स्वीकार नहीं करता है। इसलिए यहूदी रीति-रिवाजों के अनुसार, हम समझते हैं कि सगाई एक औपचारिक अनुबंध था जिसमें सगाई करने वाला जोड़ा कानूनी रूप से पति और पत्नी होता था, हालाँकि शादी के उत्सव से पहले एक साल का अंतराल होता था।

केवल उस समय ही स्त्री अपने माता-पिता का घर छोड़कर अपने पति के घर में घरेलू काम और यौन संबंध स्थापित करेगी, और अब पौलुस कहता है, मैंने तुम्हें एक पति से ब्याह दिया है। मुझे ईश्वरीय ईर्ष्या है, और वह पति मसीह है। आप जानते हैं इसका क्या मतलब है? कोई प्रतिद्वंद्वी बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।

मुझे लगता है कि आज हम विश्वासियों को यह सुनने की ज़रूरत है। आइए इसे यीशु के शब्दों में कहें। यीशु ने कहा कि कोई भी व्यक्ति दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता।

यदि आप एक की सेवा करना चाहते हैं, तो आप दूसरे से घृणा करेंगे, और उन्होंने इसे पैसे के संदर्भ में भी इस्तेमाल किया। आप धन के सेवक और भगवान के सेवक नहीं हो सकते। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि हम केवल भगवान की संपत्ति हैं।

आज विश्वासियों को जो बात समझ में आएगी, और इस बारे में सोचना होगा, वह यह है कि किसी भी प्रतिद्वंद्वी को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। अगर हम कहते हैं कि यीशु वास्तव में प्रभु हैं, तो कोई दूसरा प्रभु नहीं हो सकता। मुझे याद है कि अफ्रीका में हमारे यहाँ यह कहावत हुआ करती थी कि एक ही समय में एक शहर पर दो राजा राज नहीं कर सकते।

आपके पास एक ही समय में एक शहर पर शासन करने वाला एक राजा है, और निश्चित रूप से, आप समझते हैं कि आपके पास वास्तव में एक ही समय में एक राष्ट्र पर शासन करने वाले दो राष्ट्रपति नहीं हैं। यह एक समय में केवल एक राष्ट्रपति है। यदि आपके पास दो हैं, तो उस राष्ट्र में एक समस्या है, या यदि आपके पास किसी विशेष शहर पर दो मेयर हैं, तो एक समस्या है, और यह ईसाई धर्म में अनुवाद करता है।

आप यीशु को अपना प्रभु नहीं मान सकते और फिर किसी दूसरे प्रभु के प्रति अपनी निष्ठा रख सकते हैं, और पॉल कह रहे हैं, एक मिनट रुकिए, अगर मैं सुसमाचार में तुम्हारा पिता हूँ, अगर मैं ही वह हूँ जिसने इस चर्च की स्थापना की है, तो तुम अभी अपनी निष्ठा किसी और के प्रति नहीं बदल सकते। नंबर एक, तुम मसीह से दूर नहीं जा सकते। नंबर दो, मैं तुम्हारा प्रेरित हूँ।

इसलिए, उसे शेखी बघारनी पड़ी, लेकिन सुनिए, पॉल का एकमात्र मुद्दा दुल्हन की पवित्रता की रक्षा है। उसने कहा कि मैंने तुम्हें एक पति से ब्याह दिया है। यह पवित्रता की भाषा है।

जैसा कि क्रिसोस्टॉम ने दुनिया में उल्लेख किया है, एक महिला अपनी शादी से पहले कुंवारी होती है जब वह अपना कौमार्य खो देती है, लेकिन चर्च की ज़रूरत में, जो लोग मसीह की ओर मुड़ने से पहले कुंवारी नहीं थे, वे उसमें कौमार्य प्राप्त करते हैं। नतीजतन, पूरा चर्च कुंवारी है। मेरा मतलब है, यह शुद्ध कुंवारी कहता है।

इसमें फिर से पवित्रता की भाषा का इस्तेमाल किया गया है, हेगियन, यही वह शब्द है जिसका वह यहाँ इस्तेमाल करता है, जिसका वह इस्तेमाल करता है, शुद्ध, स्वच्छ, और हम कह रहे हैं कि पवित्रता बहुत महत्वपूर्ण है। मसीह की दुल्हन को ऐसा जीवन जीना चाहिए जो परमेश्वर को प्रसन्न करे। उस आकृति को ध्यान में रखते हुए, वैवाहिक समापन जिस पर पॉल को मसीह को एक शुद्ध कुंवारी के रूप में पेश करना है, निस्संदेह मसीहाई पूर्ति का दिन है।

यह बहुत स्पष्ट है, जैसा कि हम 2 कुरिन्थियों अध्याय 5 की आयत 1 से 10 में देखते हैं। फिर, आयत 3 में, कुरिन्थ में अपने आध्यात्मिक बच्चों के लिए अपनी ज़िम्मेदारी से प्रेरित होकर, पौलुस को यकीन हो जाता है कि घुसपैठिए उनके विश्वास के लिए एक गंभीर खतरा पेश करते हैं। कुरिन्थ में उसकी सेवकाई शायद वहाँ के मसीहियों के लिए भयानक परिणामों के साथ बेकार हो जाए, इसलिए वह पादरी के डर से डरता है।

ऐसा डर न केवल प्रेम के विपरीत है, कोई कहेगा, बल्कि प्रेम का गुण है। ऐसा डर प्रेम का गुण है। वह उनसे प्यार करता था।

वह उनसे ईर्ष्या करता था। यह सिर्फ अधिकार जताने जैसा नहीं है। नहीं, बिलकुल नहीं।

पॉल को डर था कि, हव्वा की तरह, वे पूरी तरह से धोखा खा सकते हैं, और पॉल नहीं चाहता कि ऐसा हो क्योंकि उनके दिमाग भ्रष्ट हो सकते हैं। इसे देखो। मुझे डर है कि जैसे साँप ने अपनी चालाकी से हव्वा को धोखा दिया, वैसे ही तुम्हारे विचार भी मसीह के प्रति एक ईमानदार और शुद्ध भक्ति से भटक जाएँगे।

वह चाहता है कि वे बहुत सावधान रहें। वह खुद की तुलना एक ऐसे पिता से करता है जो अपनी बेटी को सगाई और शादी में भावी पति को सौंप देता है।

वह कुरिन्थ में सुसमाचार का प्रचार कर रहा है, और लोगों की उद्धार के प्रति प्रतिक्रिया सगाई के कार्य के समान है। अपने मंत्रालय के द्वारा, पौलुस ने कुरिन्थ के विश्वासियों को एक पति, यीशु मसीह के लिए वचनबद्ध किया। वह उस समय का भी अनुमान लगाता है जब वह उन्हें मसीह के सामने एक पवित्र कुंवारी के रूप में प्रस्तुत करेगा।

इस बीच, वह उनकी पवित्रता की रक्षा करने के लिए उत्सुक है। और मैसेडोनिया से आए विश्वासियों के बारे में, जो संभवतः फिलिप्पी से उपहार लेकर आए थे, वह ज़ोर देकर घोषणा करता है कि हर चीज़ में, उसने खुद को अपने पाठकों पर बोझ बनने से बचाया और ऐसा करना जारी रखेगा। आप देखिए, आज चर्च में भी यही समस्या है।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि आज चर्च में झूठे शिक्षक हैं। हमें किसी का नाम लेने की ज़रूरत नहीं है। हम उन्हें जानते हैं।

इस पीढ़ी के मसीहियों को, कई पीढ़ियों के मसीहियों की तरह, झूठे शिक्षकों और नेताओं के मामले में अपनी समझ की कमी के लिए यीशु को जवाब देना होगा जिन्हें चर्च ने स्वीकार किया और अपनाया। हमें सावधान रहने की ज़रूरत है। और फिर आप देखते हैं कि पौलुस 5वें पद में आगे बढ़ रहा है। मुझे लगता है कि मैं किसी भी तरह से सुपर-प्रेरितों से कमतर नहीं हूँ।

ऐसा लगता है कि अब पहली बार वह उनका ज़िक्र कर रहा है। वह उन्हें सुपर-प्रेरित कहता है। मेरा मतलब है, ये सिर्फ़ झूठे प्रेरित नहीं हैं।

उन्हें सुपर प्रेरित कहा जाता है। ईसाइयों को बहुत-बहुत सावधान रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि मैं किसी भी तरह से कमतर नहीं हूँ।

तो फिर सवाल यह है कि सुपर-प्रेरित कौन हैं? मेरा मतलब है, सुपर-प्रेरितों के विचार ने बहुत सारे सवाल और चर्चाएँ पैदा की हैं। जब आप NRSV और NIV पढ़ते हैं, तो यह उन्हें पद 4 में पॉल के विरोधियों के साथ पहचानता है। अन्य व्याख्याकार सामान्य आकस्मिक बल को प्राथमिकता देते हैं। अन्य लोग तर्क देते हैं कि सबसे प्रतिष्ठित प्रेरितों के लिए पॉल का संदर्भ स्तंभ प्रेरितों या केवल 12वें प्रेरितों का अभिप्राय है, यहाँ और 12:1 दोनों में। अब, उनके लिए अलग-अलग तर्क हैं।

लेकिन शायद अगर दूसरी व्याख्या सही है, तो पॉल यहाँ खुद की तुलना कर रहा है, न कि विरोधी झूठे प्रेरितों से, जिसका मतलब है कि झूठे प्रेरितों और सुपर-प्रेरितों के बीच अंतर है। अगर कोई अंतर है, तो झूठे प्रेरित ही गलतियाँ सिखाएँगे। सुपर-प्रेरित चर्च के स्तंभ होंगे।

मेरा मतलब है, इस संबंध में कई तर्क हैं, चाहे वह कुछ भी हो। पॉल कह रहा है कि वह हीन नहीं है। यह उनसे हीन नहीं है।

अगर दूसरी व्याख्या सही है, यानी हम चर्च के स्तंभों, शुरुआती प्रेरितों या 12वें प्रेरितों या दोनों के बारे में बात कर रहे हैं, तो इसका मतलब है कि पॉल मूल प्रेरितों के बारे में बात कर रहा था। और पॉल कहता है कि मैं उनमें से किसी से भी कम नहीं हूँ। दूसरे शब्दों में, मैं अपनी बात पर उसी तरह अडिग रह सकता हूँ जिस तरह दूसरे प्रेरित अपनी बात पर अडिग रह सकते हैं।

मैं महान-प्रेरितों से कमतर नहीं हूँ। जब हम पौलुस की बात समझते हैं तो हमें बहुत सावधान रहने की ज़रूरत है: देखो, मैं जानता हूँ कि मैं कौन हूँ। मुझे मसीह का प्रेरित बनने के लिए बुलाया गया है।

फिर, तुरन्त ही छठे श्लोक में, वह रियायत के साथ अपने परिग्रहण को योग्य बनाता है, और फिर एक नया परिग्रहण एक सम यदि द्वारा पेश किया जाता है। अध्याय 11 के छठे श्लोक को देखें,

छठा श्लोक। आप यहाँ देखते हैं कि भले ही मैं बोलने में अकुशल हूँ, लेकिन मैं ज्ञान में ऐसा नहीं हूँ। वास्तव में, हर तरह से, हमने सभी बातों में यह बात आपके सामने स्पष्ट कर दी है।

भले ही मैं प्रशिक्षित वक्ता न होऊँ, लेकिन इसका यही मतलब है। इसका मतलब है कि वह अप्रशिक्षित है लेकिन अकुशल नहीं है। फिर वह ज़ोर देकर कहता है कि वह मूर्ख नहीं है।

वह ज्ञान के मामले में शौकिया नहीं है। इसलिए, वह उसी तरह से घमंड कर सकता है, और किसी को भी उसे डांटना नहीं चाहिए या यह कहने के लिए उसकी ओर नहीं देखना चाहिए कि वह महत्वपूर्ण नहीं है। आप देखिए, पौलुस को लगता है कि उसे जो मूर्खता करनी चाहिए, उसका औचित्य आज मसीह के सुसमाचार के हमारे प्रबन्धन के साथ हमारा सामना करता है।

पौलुस की तरह, हम सभी को अपनी मानवीय सीमाओं के बारे में पूरी तरह से जागरूक और सजग होना चाहिए। हमें अपनी मानवीय सीमाओं के बारे में पूरी तरह से जागरूक और सजग होना चाहिए। और, बेशक, हमें सुसमाचार में ईश्वरीय सत्य के बारे में अपने विश्वास में आश्वस्त होना चाहिए।

और अंत में, हमें उन लोगों के आध्यात्मिक कल्याण के बारे में चिंतित होना चाहिए जिनकी हम विश्वास में सेवा करते हैं। ये सभी बातें महत्वपूर्ण हैं क्योंकि हम पौलुस के घमंड को देख रहे हैं। फिर, पद सात से शुरू करते हुए, पौलुस अब अपने आत्म-समर्थन के बारे में बात करता है।

पौलुस द्वारा बिना किसी शुल्क के सुसमाचार का प्रचार करने का अभ्यास, पौलुस के शत्रुओं के लिए एक वास्तविक झटका रहा होगा, जो स्वार्थी भावना से प्रेरित थे। और आपके पास ये सनकी प्रचारक हैं जो पैसे इकट्ठा करने के लिए इधर-उधर घूमते रहते हैं। और इसके अलावा, जैसा कि हमने पहले कहा था, पौलुस के कुछ विरोधियों के लिए शारीरिक श्रम किसी भी प्रेरितिक गरिमा या स्थिति से नीचे था।

और इसलिए, चमड़े का काम करने वाले के रूप में पॉल ने अपने स्वयं के प्रेरितिक अधिकार को कमज़ोर कर दिया। दूसरे, पॉल ने उनसे पैसे लेने से इनकार करके संरक्षण और ग्राहक के सम्मेलनों का उल्लंघन किया। उसने उनका ग्राहक बनने से इनकार कर दिया।

वह खुद को ऐसी स्थिति में नहीं डालना चाहता था जहाँ कुरिन्थियों का उस पर अधिकार और नियंत्रण हो। लेकिन मुद्दा यहाँ है। पौलुस खुद भी इससे सहमत था।

मैसेडोनिया के लोगों ने उसकी ज़रूरतें पूरी कीं। अगर मैसेडोनिया के लोगों ने उसकी ज़रूरतें पूरी कीं, तो वह उनका समर्थन क्यों ठुकरा रहा है? इसका मतलब है कि वह उनसे प्यार नहीं करता। इसलिए, कुरिन्थ के चर्च को आमंत्रित करने वाले स्व-नियुक्त प्रेरितों ने अपनी सेवाओं के लिए भुगतान स्वीकार किया।

वे वेतन स्वीकार कर रहे थे, लेकिन पॉल स्वीकार नहीं कर रहा था। तो, उन्होंने क्या किया? उन्होंने इस तथ्य का उपयोग अपने कुरिन्थियन धर्मांतरित लोगों के मन में पॉल को बदनाम करने

के लिए किया। पॉल प्रभु की आज्ञा को कैसे अनदेखा कर सकता था कि जो लोग सुसमाचार का प्रचार करते हैं उन्हें सुसमाचार से अपनी आजीविका प्राप्त करनी चाहिए? इसलिए, उनके लिए, पॉल वास्तव में अपने स्वयं के शब्दों का उल्लंघन कर रहा था जिसे उसने 1 कुरिन्थियों 9, श्लोक 14 में उद्धृत किया था।

अब, यदि 1 तीमोथियुस 5, आयत 17-18 के अनुसार, चर्च में अच्छा प्रचार करने और सिखाने वाले लोग भुगतान पाने के योग्य हैं, तो क्या पौलुस अयोग्य था? इसलिए, प्रेरित ने आयत 13-15 में अपने उद्देश्यों और उन लोगों के उद्देश्यों के बीच स्पष्ट अंतर दर्शाया है जिन्हें वह झूठे प्रेरित कहता है। आप देखिए, पौलुस द्वारा बिना किसी शुल्क के सुसमाचार का प्रचार करना उसके शत्रुओं, उसके विरोधियों के लिए एक वास्तविक झटका रहा होगा, जो व्यावहारिक दृष्टिकोण से भाड़े के स्प्रे से प्रेरित थे। इसने किसी भी चीज़ से ज़्यादा उनके असली रंग को उजागर किया होगा।

पौलुस अपनी नीति के द्वारा उन्हें उजागर करना जारी रखने के लिए दृढ़ संकल्पित है। अपने अंदर मौजूद सच्चाई की अपील करते हुए, प्रेरित अखाया में अपनी नीति का घमंड करके न रुकने का दृढ़ संकल्प व्यक्त करता है। आप इसे आयत 10 में देख सकते हैं।

क्यों? क्या इसलिए कि वह कुरिन्थियों से प्रेम नहीं करता जैसा कि उसके विरोधियों ने आरोप लगाया है? नहीं। वह पद 11 में कहता है, परमेश्वर जानता है। परमेश्वर अपने पाठकों के लिए उसकी भावनाओं को जानता है।

परमेश्वर उसकी प्रेरणा जानता है। परमेश्वर उसकी सेवकाई जानता है। पौलुस की वित्तीय नीति ने दोहरी कठिनाई पैदा की, जिसे उसके शत्रुओं ने संभवतः समझ लिया, और वे उससे चिपक गए, जिसका हमने अभी उल्लेख किया है।

इसका मतलब यह है कि यह प्रेरित नहीं था, क्योंकि इसने प्रेरितिक विशेषाधिकार का प्रयोग नहीं किया। प्रेरितिक विशेषाधिकार पैसा था। अब, हमें इसके बारे में थोड़ा सा कहना होगा, भले ही हम वित्त के बारे में बात कर रहे हों।

आज हमें बहुत सावधान रहने की ज़रूरत है, क्योंकि हम सिर्फ़ पैसे से प्रेरित होते हैं। हम प्रचार करते हैं। प्रचार करने से पहले लोग पहले ही कह देते हैं, ठीक है, कृपया, मेरी प्रेम भेंट इस राशि से कम नहीं हो सकती।

इसलिए वे पहले से ही हिसाब लगा लेते हैं, यह मेरी प्रेम भेंट है। यह आज भी किया जाता है जब लोग प्रचार करते समय जो प्रेम भेंट चाहते हैं, उसके लिए मोल-तोल करते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि चर्च इसे वहन कर सकता है या नहीं।

मुझे एक पादरी की कहानी याद है जो प्रचार करने के लिए इंग्लैंड गया था। अब यह एक सच्ची कहानी है: वह अमेरिका छोड़कर प्रचार करने के लिए इंग्लैंड गया था। और जब वह वहां पहुंचा, तो वह एक निजी जेट से गया।

और जब उसने काम पूरा कर लिया, तो उन्होंने उसे एक निश्चित राशि दी, जो उसे लगा कि पर्याप्त नहीं है। उसने कहा, ठीक है, यह राशि जो आप मुझे देना चाहते हैं, आप अपना पैसा ले लीजिए, लेकिन बस उस जगह का भुगतान करें जहाँ मैंने अपना विमान पार्क किया था, यानी हैंगर जहाँ मैंने अपना विमान पार्क किया था, क्योंकि आपने मुझे जो पैसे दिए हैं, वे मेरे विमान में इस्तेमाल किए गए पैसे के बराबर भी नहीं हैं।

पॉल कहते हैं, क्षमा करें, मैं ऐसा नहीं हूँ। पॉल जो कह रहे हैं वह आज के लिए प्रासंगिक है। आप देखिए, जो प्रचारक कोरिंथियन चर्च में घूम रहे थे, वे पैसे लेकर प्रचार कर रहे थे।

पॉल कहते हैं, मुझे बाहर रखें। मैं किसी को भी मेरी शेखी बघारने की अनुमति नहीं दूंगा। वह अपनी नीति को जारी रखेगा ताकि अपने दुश्मनों के लिए अवसरों को खत्म कर सके जो वित्तीय नीतियों में उसके बराबर माने जाने की इच्छा रखते हैं।

इसलिए, पौलुस कहता है, नहीं, मुझे उनमें से एक मत समझो। वह जानता था कि उसके दुश्मन क्या चाहते हैं, और वह उनके जाल में नहीं फँसने वाला था। वे उसे अपने सेवकाई की नीति अपनाने के लिए मजबूर करके अपने नुकसान को कम करने की कोशिश कर रहे हैं।

फिर आप आयत 13 से 15 में देखते हैं, क्योंकि ऐसे घमंडी लोग झूठे प्रेरित, धोखेबाज़ कार्यकर्ता हैं, जो मसीह के प्रेरितों का वेश धारण करते हैं। और कोई आश्चर्य नहीं कि शैतान भी खुद को ज्योतिर्मय स्वर्गदूत के रूप में प्रच्छन्न करता है। इसलिए, यह कोई अजीब बात नहीं है कि उसके सेवक भी खुद को धार्मिकता के सेवकों के रूप में प्रच्छन्न करते हैं।

उनका अंत उनके कर्मों से मेल खाएगा। उनका अंत उनके कर्मों से मेल खाएगा। आप देखिए, हमें पॉल की बात सुनने की ज़रूरत है।

उसने कहा कि ये लोग बहुत चालाक हैं। वह उन्हें धोखेबाज़ कर्मचारी कहता है। अब पॉल साफ़-साफ़ बताता है कि उसका क्या मतलब था।

वह कुरिन्थ में अपने विरोधियों के साथ अपने मतभेदों को और भी तीखा कर देता है। इसे इस तरह से कहें तो ऐसा लगता है कि वह गुस्से में था।

यह एक तरह का पवित्र क्रोध है। वह उनका वर्णन बहुत ही कठोर भाषा में करता है। वह उन्हें क्या कहता है? वह कहता है कि ऐसे लोग झूठे प्रेरित हैं।

वे धोखेबाज़ कामगार हैं, जो मसीह के प्रेरितों, छद्म-अपोस्टोलोस, का मुखौटा पहने हुए हैं। आप जानते हैं कि पॉल क्या कहता है? वह उन्हें किसी भी वैधता से वंचित करता है। वह उनके असली प्रेरित होने के दावे को नकारता है।

उन्होंने इसे वैसा ही कहा जैसा कि यह है। पॉल के दृष्टिकोण से, वे कुरिन्थ में जो संदेश लेकर आए, उसमें वे झूठे हैं। उन्होंने एक अलग यीशु, एक अलग आत्मा और एक अलग सुसमाचार की घोषणा की, जो पॉल ने उन्हें घोषित किया था।

वे जो तरीके अपनाते हैं, वे झूठे हैं, जैसा कि पौलुस आयत 13 से 15 में संकेत करता है। न केवल उनका संदेश ग़लत था, बल्कि उनके तरीके भी ग़लत थे—धोखेबाज़ कार्यकर्ता।

कोरिंथ में उनकी गतिविधियाँ धोखेबाज़, विश्वासघाती और चालाक हैं। धोखेबाज़। मेरा मतलब है, जब लेन्स्की धोखेबाज़ शब्द का वर्णन करते हैं, तो उन्होंने कहा कि इसका मूल अर्थ चारा होता है।

और इसीलिए वह उनके झांसे में नहीं आने वाला था। नहीं, बिल्कुल नहीं। यह तो शिकार पकड़ने के लिए लगाया गया था।

वे चारा इस्तेमाल कर रहे थे। वे लोगों को पकड़ रहे थे। वे अपने बेस में लोगों को पकड़ रहे थे, और चारा कुरिन्थियों पर फेंक रहे थे।

वे जानते थे कि वे क्या चाहते हैं। और आज भी यही होता है, जहाँ झूठे शिक्षक चारा फेंकते हैं। वे जानते हैं कि लोग क्या सुनना चाहते हैं।

और वे उन्हें वही बताते हैं जो वे सुनना चाहते हैं, बजाय इसके कि परमेश्वर उन्हें क्या सुनाना चाहता है। धोखेबाज़ कर्मचारी। ऐसा लगता है कि चर्च में मिशनरी सेवा में लगे लोगों के लिए इस शब्द का इस्तेमाल तकनीकी तौर पर किया जाता है।

फिर वह कहता है कि वे केवल मसीह के प्रेरितों का मुखौटा लगा रहे हैं। मसीह के प्रेरितों की तरह, यह संभवतः उनके पसंदीदा पदनामों में से एक था; वे प्रेरित कहलाना चाहते थे।

उन्होंने खुद को यही नाम दिया। लेकिन पॉल जोर देकर कहते हैं कि यह एक दिखावा था। यह एक भेस था।

एक दिखावा। इसलिए, वह उन्हें झूठे प्रेरित कहता है। और यह बहुत दिलचस्प है कि पद 13 से 15 में छद्मवेश शब्द एक आकर्षक शब्द है।

यह तीन बार आता है। इसकी तीन बार उपस्थिति श्लोक 13 से 15 में छंदों को एक साथ बांधती है। वह उन्हें छद्मवेश कहता है।

वे छद्मवेश हैं। पद 13 से 15 में तीन बार यूनानी भाषा का प्रयोग किया गया है। इसलिए, पद 14 में, व्यंग्यात्मक भाषा में, व्यंग्यात्मक भाषा में, प्रेरित आगे कहते हैं और जोर देते हैं कि इसमें कुछ भी अविश्वसनीय नहीं है।

उन्होंने कहा, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि शैतान खुद भी ज्योतिर्मय देवदूत का वेश धारण करता है। शैतान को ज्योतिर्मय देवदूत के रूप में वर्णित करके पॉल संभवतः कुछ यहूदी किंवदंतियों से

परिचित हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि देवदूत, शैतान भी खुद को देवदूत का वेश धारण करता है।

और मुझे इसे इस तरह से कहने में खुशी हो रही है। वह जानता है कि शैतान कभी-कभी चालाक साँप और दहाड़ते हुए शेर के रूप में प्रयास करता है। लेकिन वह यह भी जोड़ता है कि शैतान अक्सर, प्रकाश के दूत के रूप में, लोगों को धर्म के नाम पर ऐसे काम करने के लिए उकसाता है, जो धर्म के लिए विध्वंसक हैं।

वे ईसाई धर्म के नाम पर ऐसे काम करते हैं, जो वास्तव में इसे नष्ट कर देते हैं। मेरा मतलब है, पॉल यही कह रहा है। श्लोक 15 में, वह कहता है, इसलिए यह अजीब नहीं है कि उसके मंत्री भी धार्मिकता के सेवकों के रूप में खुद को छिपाते हैं।

क्या आप देखते हैं कि पॉल क्या करता है? उसके तर्क का तरीका मुख्य से लेकर छोटे तक है। वह इसी तरह के तर्क का इस्तेमाल करता है। अगर शैतान खुद को ज्योतिर्मय स्वर्गदूत के रूप में पेश करता है, तो उसके सेवक कितने ज़्यादा हैं?

इसलिए, यदि शैतान, महान, उद्धरणों में महान, भेष बदल लेता है, तो यह अजीब नहीं है कि छोटे, जो सेवक हैं, वे भी खुद को कुछ अलग रूप में छिपा लेते हैं जो वे वास्तव में नहीं हैं। हमें विवेकशील होना चाहिए। आप जानते हैं, वह उन्हें सेवक, आर्कन ओई, वास्तव में मंत्री कहता है, जो इस बिंदु तक पूरे पत्र में महत्वपूर्ण रहा है।

हमने धार्मिकता के सेवकों को देखा है। मेरा मतलब है, हमने इसे विभिन्न स्थानों पर देखा है, लेकिन यहाँ, वे खुद को धार्मिकता के सेवकों के रूप में प्रच्छन्न करेंगे। लेकिन वह कहता है, नहीं, देखो वह क्या कहता है। उनका अंत उनके कर्मों के अनुरूप होगा।

अब, पौलुस का व्यवहार एक प्रेरितिक रणनीति से कहीं अधिक था। यह गहरे उद्देश्यों से, मसीह के बारे में उसके ज्ञान और अनुभव से आया था। पौलुस के रवैये का अंतिम औचित्य मसीह-संबंधी था, यह कहते हुए कि, देखो, मैंने मसीह को तुम्हारे सामने प्रस्तुत किया है।

आप मसीह की सच्चाई से बदल गए हैं। और इस सच्चाई से पौलुस को अलग नहीं किया जा सकता था। और वह कुरिन्थियों से कह रहा था, सावधान रहो।

फिर 11:16 से 21 तक, वह फिर से अपनी शेखी बघारने से बचने की अपील करता है। पौलुस के व्यंग्य और खुद को बढ़ावा देने में उसकी हिचकिचाहट को आयत 16 से 21 में आसानी से दर्शाया जा सकता है। वह यीशु के बारे में बात करना पसंद करता है।

लेकिन उस संदेश को कुरिन्थियों द्वारा एक सच्चे प्रेरित के रूप में, यीशु के एक सच्चे प्रतिनिधि के रूप में उनकी साख की उपेक्षा के कारण बाधा पहुँचती है। पौलुस उन असली मूर्खों की तरह नहीं है जो अपनी साख का बखान करते हैं। आप देखिए, कुरिन्थ में पौलुस के प्रतिद्वंद्वियों ने कुरिन्थियों का पक्ष जीतने के लिए एक हथियार के रूप में घमंड का इस्तेमाल किया।

वह क्या कहता है? वह कहता है, यह देखकर कि बहुत से लोग शरीर के पीछे महिमा करते हैं, मैं भी महिमा करूँगा। उसने कहा, ठीक है, वे ऐसा कर रहे हैं। तो मुझे भी ऐसा करने दो।

चूँकि वे ऐसा कर रहे हैं, इसलिए मैं भी ऐसा करूँगा। तो, आप समझ जाएँगे कि इसका क्या मतलब है। ऐसी युक्तियों को स्वीकार करने से हताश होकर पौलुस भी शेखी बघारने के साधनों का उपयोग करने लगता है।

और आप जानते हैं, जैसा कि मैंने कहा, मुझे याद है कि हमारी कहावत क्या कहती है। इसमें एक जगह कहा गया है, मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार जवाब मत दो। इसलिए, आप मूर्ख नहीं दिखना चाहते।

लेकिन फिर अगली आयत में फिर से कहा गया है कि मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर दो। क्योंकि अगर तुम चुप रहोगे, तो वह सोचेगा कि अन्यथा, तुम्हें उसकी मूर्खता को उसके सामने प्रकट करने की आवश्यकता है। और यही बात पौलुस की मूर्खतापूर्ण शेखी बघारने से यहाँ भी स्पष्ट होती है।

हमने कहा कि अगर पॉल चुप रहता, तो जब वह बाहर होता, तो वह साहसी होता। लेकिन जब वह यहाँ होता, तो वह डरपोक होता, वह भयभीत होता। इसलिए, अगर वह चुप रहता, तो यह एक समस्या है।

लेकिन अब वह कहता है, ठीक है, मुझे तुम्हें यह बताना होगा कि मैं भी उतना ही साहसी हूँ जितना तुम हो ताकि तुम अपनी मूर्खता देख सको। तो यहाँ बिल्कुल यही हो रहा है। पॉल उन्हें यह बताता है।

अब, मैं इसे इस तरह से कहूँगा। उन्होंने कहा, आप लोग, आप बिल्कुल गलत हैं। वे अपनी साख के आधार पर शेखी बघार रहे थे।

यह तब स्पष्ट होगा जब पॉल शुरू करेगा, जब वह एक सच्चे प्रेरित के रूप में अपनी खुद की साख बताना शुरू करेगा। आप देखिए, पॉल को अपने बारे में लिखने में कुछ मजबूरी महसूस होती है, यह देखते हुए कि कई लोग मानवीय मानकों के अनुसार घमंड करते हैं, मैं घमंड करने जा रहा हूँ। यही उसने कहा।

लेकिन पौलुस का घमंड उन लोगों के घमंड जैसा नहीं होगा जो शरीर के अनुसार घमंड करते हैं। फिर से, पौलुस एक तीखे व्यंग्य का इस्तेमाल करता है। आप देखिए, जब हमारे लिए घमंड करना ज़रूरी हो, तो हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम ऐसा न करें जैसा लोग आम तौर पर करते हैं।

हमें एक योग्य उद्देश्य से प्रेरित होना चाहिए और इसे इस तरह से करना चाहिए कि परमेश्वर की महिमा हो। यह तभी संभव है जब हम पवित्र आत्मा के अधीन हो जाएँ, पवित्र आत्मा के नियंत्रण

मैं, हम ऐसा कर सकते हैं। अगर कोरिंथियन मसीही इतने मूर्खों को सहन करने के लिए पर्याप्त बुद्धिमान हैं, तो निश्चित रूप से वे कुछ समय के लिए पॉल की बात सुन सकते हैं।

मेरा मतलब है, वे कई मूर्खों की बातें सुन रहे हैं जो उनके बीच आ रहे हैं। वे कुछ समय के लिए पॉल की बात क्यों नहीं सुन सकते? इसलिए, 21 से उस अध्याय के अंत तक आगे बढ़ते हुए, पॉल अपनी खुद की साख की सूची बनाना शुरू करता है। इस बारे में सोचें।

मैंने आपको एक व्याख्यान में बताया था कि मैं आमतौर पर अपने छात्रों के साथ ऐसा करता हूँ। मैं उन्हें बताता हूँ कि ये पॉल की योग्यताएँ हैं। अब, सेवकाई के लिए पॉल की योग्यताएँ देखें।

उन्होंने कहा, "मुझे शर्म आती है, मुझे कहना पड़ता है कि हम इसके लिए बहुत कमज़ोर थे। लेकिन जो भी कोई शेखी बघारने की हिम्मत करता है, मैं मूर्ख की तरह बोल रहा हूँ। मैं भी उस पर शेखी बघारने की हिम्मत करता हूँ।"

क्या वे इब्रानी हैं? मैं भी इब्रानी हूँ। बहुत बढ़िया। अब तक तो सब ठीक है। क्या वे इसराएली हैं? मैं भी इब्रानी हूँ। अब तक तो सब ठीक है।

क्या वे अब्राहम के वंशज हैं? अद्भुत। क्या वे मसीह के सेवक हैं? ओह, यह बहुत बढ़िया है। मेरा मतलब है, अद्भुत महान साख।

मैं पागलों की तरह बात कर रहा हूँ। मैं कहीं बेहतर हूँ, मेरे पास कहीं ज़्यादा लेबल हैं, कहीं ज़्यादा कारावास है। और फिर अब, उसकी साख पर नज़र डालिए।

मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ फिर से श्लोक 23 से पढ़ना शुरू करें, भले ही हमने इसे एक बार पढ़ा हो। लेकिन आप इसे फिर से पढ़ें। श्लोक 23 में लिखा है, क्या वे मसीह के सेवक हैं? मैं ऐसे बोल रहा हूँ जैसे मैं पागल हूँ।

मैं और भी कई लेबल्स में हूँ। अब, यह सुनिए। यहाँ उनके प्रमाण-पत्र हैं।

अधिक लेबल, अधिक कारावास, अनगिनत बार पीटा गया, अक्सर मौत के खतरे में, पाँच बार उनतीस कोड़े खाए, तीन बार मुझे डंडों से पीटा गया, एक बार मुझे पत्थर मारा गया, तीन बार मेरा जहाज़ डूब गया, एक शूरवीर और... मेरा मतलब है, ये बहुत अच्छी योग्यताएँ हैं, है न? मेरा मतलब है, कौन इन शानदार और महान योग्यताओं वाले किसी व्यक्ति को काम पर रखना चाहेगा? हर जगह पीटा गया, हर जगह पीटा गया। लेकिन वह कहता है, देखो। वास्तव में, जब वह श्लोक 33 पर पहुँचता है, तो वह कहता है, मुझे एक टोकरी में नीचे उतारा गया।

यह कितना बुरा था। जब मैं इस भाग को पढ़ता हूँ, तो विलियम शेक्सपियर की जूलियस सीज़र की हत्या की कहानी याद आती है। आप जानते हैं, ब्रूटस ही वह व्यक्ति था जिसने जूलियस सीज़र की हत्या उसके अंतिम संस्कार के समय की थी, माफ़ करें, जब जूलियस सीज़र की हत्या हुई थी।

अंतिम संस्कार के समय ब्रूटस यह कहने के लिए आता है कि जूलियस सीज़र एक अति महत्वाकांक्षी व्यक्ति था। ब्रूटस और उसके साथी रोम से इतना प्यार करते थे कि, हालाँकि वे सीज़र को मारना नहीं चाहते थे, फिर भी उन्हें ऐसा करना पड़ा। इसलिए, मैकएंथनी अब परिचित भाषण देने के लिए खड़ा होता है।

याद कीजिए, जब सीज़र को मारा गया था, तो उसने कहा था, एट टू, ब्रूट, और तुम भी, ब्रूटस। अब, मैकएंथनी आता है और भाषण देता है। वह कहता है, दोस्तों, रोमनों, देशवासियों, मुझे अपने कान उधार दो।

मैं सीज़र को दफ़नाने आया हूँ, उसकी प्रशंसा करने नहीं। लेकिन फिर, वह इस भाषण में धीरे-धीरे और चतुराई से सीज़र की प्रशंसा करना शुरू कर देता है, अपने दोस्त की महानता को उजागर करता है, और ब्रूटस के शब्दों को कमज़ोर करता है। सुनिए वह क्या कहता है।

वह मेरा मित्र था, मेरे प्रति वफ़ादार और न्यायप्रिय था, लेकिन ब्रूटस कहता है कि वह महत्वाकांक्षी था, और ब्रूटस एक सम्माननीय व्यक्ति है। जब गरीब रोए हैं, तो सीज़र रोया है। महत्वाकांक्षा को मानक सामान बनाया जाना चाहिए, फिर भी ब्रूटस कहता है कि वह महत्वाकांक्षी था, और ब्रूटस एक साधारण व्यक्ति है।

आप देखिए, मैकएंथनी इसी तरह से आगे बढ़ता है, माननीय ब्रूटस के बारे में बात करते हुए, उद्धरण में, एक माननीय ब्रूटस जिसने अभी-अभी इस महान व्यक्ति को मार डाला था, और अंत में, उसने सभी को ब्रूटस के खिलाफ कर दिया। यह दावा करते हुए कि वह सीज़र की प्रशंसा नहीं करेगा, मैकएंथनी वास्तव में अपने मित्र की महानता को स्पष्ट करता है। पॉल का पूरा भाषण कुछ हद तक इसी तरह का है।

उसने कहा, यह मूर्खतापूर्ण घमंड है, और मैं वास्तव में घमंड नहीं करना चाहता। पॉल, तुम वास्तव में घमंड नहीं करना चाहते, और वह घमंड करने लगा। वह वास्तव में कहता है, नहीं, ये प्रचारक, यही हैं।

वह उनकी मूर्खता को उजागर करता है, और वह कुरिन्थियों की मूर्खता को भी प्रकट करता है कि वे किस तरह से दूर हो गए हैं। मेरा मतलब है, पौलुस एक मूर्ख की तरह बोलता है, और अपने विरोधियों की तरह शेखी बघारते हुए, वह उनकी शेखी बघारने को उलट देता है। वह कहता है कि वह अपने विरोधियों की तरह बोलने जा रहा है, लेकिन वास्तव में, वह बिल्कुल इसके विपरीत करता है।

आप देखिए, पॉल के विरोधियों ने महत्वपूर्ण दावे किए हैं। एक, उन्होंने यहूदियों के रूप में अपनी जातीय पृष्ठभूमि का दावा किया। पॉल ने उनके दावे का यह कहकर खंडन किया कि उनकी पूरी जातीय पृष्ठभूमि उनके विरोधियों के समान ही है।

वह इब्रानियों का इब्रानी था, एक ऐसा शब्द जो उसे हेलेनाइज़्ड यहूदियों से अलग करता था। वह एक इस्राएली और अब्राहम का वंशज था। इस तरह, उसे अब्राहम के परिवार ने गोद नहीं लिया था, जैसा कि गैर-यहूदी विश्वासियों को लिया जाता था।

ध्यान देने वाली बात यह है कि पॉल के लिए, मसीह में न तो यहूदी और न ही गैर-यहूदी श्रेष्ठ थे। हालाँकि, पॉल के विरोधियों के लिए जातीयता मायने रखती थी। इसलिए, पॉल ने जवाब दिया कि वह उनके जातीय मानक से आगे निकल गया है।

दूसरा, उन्होंने मसीह के सेवक होने का दावा किया। इसलिए, पद 23 से 33 में, पौलुस ने प्रभु के प्रति अपनी असाधारण सेवा का वर्णन किया। वह सुसमाचार की घोषणा के लिए अपने कष्टों का विवरण देता है।

आप देखिए, उसकी पीड़ाओं की संख्या, आवृत्ति, विविधता और तीव्रता बहुत ज़्यादा है। उसने किसी भी व्यक्ति की तरह ही दर्द का अनुभव किया, लेकिन उसके पास एक उचित दृष्टिकोण था, यह जानते हुए कि यह सब मसीह के लिए था। और अब सुनिए, यह सब सिर्फ मसीह के लिए नहीं था, बल्कि यह कुरिन्थियों के लिए भी था।

इसलिए, कुरिन्थियों को यह समझ लेना चाहिए कि पौलुस से दूर होकर इन लोगों की ओर मुड़ना मूर्खता है जो उनसे पैसे कमा रहे हैं। एक सच्चे प्रेरित के रूप में, उसके मन में उनके लिए सहानुभूति थी। यदि वे मसीह के सेवक हैं, तो यह और भी अधिक था।

हम इसे पद 25 में देखते हैं। पद 26 में, वह कहता है कि वह लगातार यात्रा करता रहा, सेवकाई में यात्रा करता रहा। आप देखिए, अंतिम विश्लेषण में, पौलुस को जिस बात पर सबसे अधिक गर्व है, वह है वह समय जब उसकी अपनी कमज़ोरी सबसे अधिक स्पष्ट थी।

वह प्रेरितों के काम अध्याय 9 में अपने अनुभव को कमज़ोरी और अपमान के उदाहरण के रूप में संदर्भित करता है। वह कहता है कि यही वह अवसर है जिस पर वह सबसे ज़्यादा गर्व करेगा। पौलुस ने जो करने का निश्चय किया था वह उसके लिए मायने रखता था; पौलुस ने जो निश्चय किया था वह उसके लिए सबसे ज़्यादा मायने रखता था वह था मसीह की स्वीकृति।

उसने पहचाना कि उसकी कमज़ोरी में प्रभु यीशु मसीह की महिमा होती है। हर बार जब वह कमज़ोर होता था, और कुछ पूरा होता था, तो यीशु को सम्मान, महिमा और श्रेय मिलता था। प्रभु के प्रति यह एकनिष्ठ भक्ति ही थी जिसने पौलुस को इस बात की परवाह करना छोड़ दिया कि ईसाई समाज के लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं।

उनका जीवन यीशु मसीह से जुड़ा हुआ था, जिसने उन्हें बड़ी विपत्तियों और कठिनाइयों के बीच विजयी जीवन जीने में सक्षम बनाया। कुरिन्थ में पौलुस का विरोध बिल्कुल इसके विपरीत था। वे चाहते थे कि दूसरे उनके बारे में अच्छा बोलें।

वे इस बात पर बहस करते थे कि उनके दोस्तों में किसका नाम ज़्यादा है। इसलिए पौलुस कहता है कि वह भी उनकी तरह घमंड करेगा। लेकिन फिर, मार्क एंथोनी की तरह शुरू करते हुए, जिसने कहा, मैं कैसर को दफनाने आया हूँ, उसकी प्रशंसा करने नहीं, पौलुस का घमंड उसकी कमज़ोरी है।

उसकी खुद की शेखी उसके विरोधियों की मूर्खता को उजागर करती है।

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 12, 2 कुरिन्थियों 11, पॉल की मूर्खतापूर्ण शेखी है।